बैगा जनजाति की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (एक ऐतिहासिक विश्लेषण)

डॉ. रश्मि दुबे

प्राध्यापक, समाजशास्त्र

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

बैगा जनजाति भारत की सबसे आदिम जनजाति है। इस जनजाति की पहचान इनकी अपनी संस्कृति है। आधुनिकता के इस दौर में भी बैगा जनजाति अपनी संस्कृति को संजोये हुये हैं। इनका रहन-सहन, खान पान अत्यंत सादा होता है। वेरियर एल्विन ने बैगा जनजाति की सात जातियां बताई है बिंझवार, भरोटिया, नरोटिया(नहार), रायभैना, कठभैना, कोंडा और गोंडवेना। बैगा जनजाति में बहु पत्नि प्रथा का प्रचलन है। ये लोग पुर्नजन्म पर विश्वास करते हैं। बैगा जनजाति में परिवार की समस्त संपत्ति घर के मुखिया की होती है बैगा महिलायें आभूषण प्रिय होती हैं इनकी संस्कृति में गोदना का अत्यधिक महत्व है। बैगा लोग पहाड़ी के ढलान या पहाड़ के समतल पर अपना घर बनाते हैं। जंगली कंद व पेज(पेय) भाजी इनका मुख्य भोज्य पदार्थ है। इस जनजाति में महुआ की शराब का प्रचलन अधिक है। बैगा जनजाति का प्रसिद्ध नृत्य करमा है तथा मांदर इनका प्रमुख वाद्य यंत्र है। बैगा जनजाति धार्मिक प्रवृत्ति की होती है इनमें अंधविश्वास व जादू की बहुत मान्यता है। इनका मुख्य व्यवसाय वनोपज संग्रह, पशुपालन तथा बेबर कृषि है। ये शिकार प्रिय भी होते हैं। वैगाओं की उत्पत्ति के संवंध में अनेक किवदंतिया भी विद्यमान हैं। पूरे भारत वर्ष में मध्यप्रदेश में सर्वाधिक बैगा जनजाति निवास करती है।

मुख्य शव्द - वैगा, जनजाति, गोदना, टोटम, वेबर कृषि

वैगा जनजाति द्रविड़ समूह की एक आदिम जनजाति है। यह जनजाति भारत की प्राचीन जनजातियों में से एक है। वैगा भारत के आठ राज्यों मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और पश्चिम वंगाल में निवास करते है। मध्यप्रदेश के मण्डला, डिंडौरी तथा बालाघाट जिलों में बैगा जनजाति वहुतायात संख्या में है। वैगा जनजाति अपनी अनूठी सामाजिक व्यवस्था एवं संस्कृति के लिये जानी जाती है। वैगा जनजाति जितनी प्राचीन जनजाति है उतनी ही प्राचीन वैगाओं की संस्कृति है। बैगा जनजाति अपनी संस्कृति को संजोये हुये है। ये जनजाति अपने आप को जंगल का राजा और प्रथम मानव मानते हैं बैगा जनजाति अपनी उत्पत्ति व्रम्हा जी से मानती है। आज आधुनिकता के दौर में भी हमारे देश में ऐसे लोग हैं

जिनका जीवन, रहन-सहन, खानपान, बोलचाल, आधुनिक जीवन शैली से बिल्कुल अलग है समाज की अवधारणा कठिन है, उसके विभिन्न अंगों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं तथा व्यक्तियों में परिवर्तन की प्रक्रिया भी निहित होती हैं परिवर्तन की यह मात्रा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ऐतिहासिक पद्धति का सहारा लिया जाता है। जिसमें एक समय विशेष तथा स्थान पर मानव जीवन से संबंधित घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन होता है। ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग वास्तव में भूतकाल की पृष्ठभूमि में वर्तमान को समझने और भविष्य को सुधारने में अधिक होता है। इसी सन्दर्भ में बैगा जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास इस शोध पत्र में किया गया है।

बैगा जनजाति की उत्पत्ति - बैगा जनजाति की उत्पत्ति के बारे में कोई लिखित प्रमाण नहीं है, परन्तु इनकी उत्पत्ति कथा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी आदम व इब की है। एल्विन ने अपनी पुस्तक द बैगाज' में बैगाओं की उत्पत्ति कथा के संबंध में लिखा है - सप्तऋषियों में से एक बाबा वशिष्ठ मुनि भगवान के गुरू थे जो अपनी तपस्या काल में, तूंबी (सूखी हुई खोखली, कड़वी लौकी) में तेरह वर्षो से पेशाब कर रहे थे। तेरह वर्ष बाद तूंबा फट गया और उसमें से छोटा सा नंगा बैगा रोता हुआ निकला। बाबा वशिष्ठ उसे देख क्रोधित हुए और बच्चे को उठाकर जंगल में फेंक दिया। एक नागिन ने उसकी रक्षा की और दो बूंद दूध पिलाकर बांबी (सांप का बिल) में सुरक्षित रख दिया। इसके बाद काले कौबरा (काला सांप) ने एक लड़की को जन्म दिया। बांबी के दो भागों में एक तरफ लड़का व दूसरी तरफ लड़की रहने लगी। यही 'नंगा बैगा' और 'नंगा बैगिन' कहलाए। बाद में इन्हीं से बैगा जाति की उत्पत्ति हुई। रसेल व हीरालाल ने भी अपनी पुस्तक द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्राविन्सेज ऑफ इंडिया' में बैगा जनजाति की उत्पत्ति कथा के संबंध में लिखा है- 'भगवान ने नंगा बैगा और नंगा बैगिन को सृष्टि के प्रारंभ में बनाया। इस युगल ने दो पुत्रों को जन्म दिया जिसमें एक बैगा और दूसरा गोंड कहलाया। इन दोनों ने अपनी ही दोनों बहनों से विवाह किया जो उनके बाद पैदा हुई थीं। अग्रज युगल बैगा जाति के पूर्वज कहलाया और अनुज युगल गोंड़ जाति का वंशज कहलाया।'

मण्डला के भूमिया बैगा की उत्पत्ति कथा शेख गुलाब ने 1956 में चांडा के बिलमा नामक वृद्ध से इस प्रकार प्राप्त की- वहुत समय पहले जव चारों ओर जल ही जल था, जल में केवल एक कमल का फूल व पत्ते थे जिन पर देवता गण वैठते थे। एक बार हवा के झोंके से पत्तों पर पानी भर गया देवतागण भीग गये। देवताओं ने क्रोधित होकर पानी पर धरती वनाने का विचार किया उस समय जम्बू द्वीप में नागा बैगा रहता था। देवताओं ने उसे धरती खोजने का कार्य दिया। नंगा बैगा ने कौआ कुंवर व कौआ कुंवर ने केंकड़े से इस कार्य में सहायता ली। दोनों लड़न राजा के तालाव के पास पहुंचे जहां एक अति सुंदर नाग कन्या स्नान कर रही थी। दोनों ने उसे पृथ्वी समझा और चालाकी से उसे अपने शब्द जाल में फंसा लिया और देवताओं के पास लेकर गये सुंदर कन्या देख सभी देवता अति प्रसन्न हुए और जल राशि के ऊपर उस सुन्दर कन्या का स्वयंवर रचाया। कन्या ने किसी देवता का वरण नहीं किया तब जम्बू द्वीप से देवताओं ने नंगा बैगा को बुलवाया जिसके शरीर में भस्म लगी थी कन्या ने नंगा बैगा के गले में वरमाला डाल दी लेकिन नंगा बैगा आगबबूला हो गया उसने कहा - 'मैं इसे अपनी

पुत्री मान चुका हूं इसने ऐसा पाप क्यों किया ?'' यह कहते हुए फरसे से कन्या के दो टुकड़े कर दिया। कन्या का खून सारे जल में फैल गया। नंगा बैगा व देवताओं ने जब उस खून को थपथपाया तो वह जम गया और वही पृथ्वी की सतह बन गई। ऊंचे स्थान पहाड़ व नीचे के स्थान समुद्र व झील बन गये। नंगा बैगा ने भूमि को बनाया इसलिए वो भूमिया' कहलाया।

जातियां व उपजातियां -

आदिम जाति बैगा के विस्तृत परिधि में अनेक उपजातियां समाविष्ट हैं। विभिन्न अनुसंधानकर्ताओं ने बैगा जाति विभाजन पर अपने विभिन्न मत प्रकट किए हैं- सर्वप्रथम कर्नल वार्ड ने बैगा जातियों के तीन वर्ग बताये हैं- बिंझवार या बिंचवार, मोंडया व भरोटिया। रसेल व हीरालाल ने बैगा जनजाति की सात जातियां बतायी हैं - बिंझवार, भरोटियां, नरोटिया ,रायभैना, कठभैना, कोंडा (कुंडी) और गौंडवेना। वेरियन एल्विन ने बैगा जातीय सूची में कुर्क बैगा, दुध-भैना और सावत बैगा को भी शामिल किया है। एल्विन के अनुसार - हर बैगा जाति का अपना अलग-अलग क्षेत्र, भौगोलिक स्थिति का स्वरूप है। बिंझवार बैगा लोग अधिकतर बिहारमें रहते हैं और देश का उत्तर-पूर्वी भाग उन्होंने घेर रखा है। भरोटिया जाति के लोगों का क्षेत्र भी मुख्यतः बिहार है, ये भूमिया जैसे हैं। इनमें से कुछ भूमिया बैगा मण्डला जिला के बैगाचक में रहते है। भूरिया बैगा अधिकतर निवास (जिला मण्डला) में, नरोटिया (नहार) बैगा बिहार में तथा भैना बैगा (रायभैना, कठभैना, दुध-भैना) बिलासपुर व रीवा में पाये जाते हैं। गौंडवैना व कोंडवान बैगा बालाघाट में रहते हैं तथा भूमिया बैगा मंडला डिंडोरी मेकलरेंज के घने जंगलों में पाये जाते हैं, जो कि अमरकंटक से शुरु हुआ है।

वेरियर एल्विन ने बैगा जनजाति की जो सात जातियां बतायी हैं उनमें बिंझवार, भरोटिया और नरोटिया विशेष हैं। रसेल व हीरालाल बिंझवार जाति की उत्पति विंध्यान शिकारी वर्ग से बताया है इनमें अपनी जाति के बाहर विवाह करने में कोई कड़ा प्रतिबंध नहीं पाया गया है। कवर्धा में उपरोक्त तीनों जातियां (बिंझवार, भरोटिया व नरोटिया) आपस में विवाह कर सकती हैं। यद्यपि ये जातियां आपस में खान-पान संबंधी निषेध नियमों को मानती है। बालाघाट में भरोटिया व नरोटिया के बीच आपस में खान पान संबंध पाये जाते हैं। इनमें आपस में विवाह संबंध भी स्थापित होते हैं। बिंझवार अपने आपको हिन्दू के समान मानते हैं और बछड़े, गाय तथा खरगोश का मांस नहीं खाते हैं जबकि अन्य बैगा इनमें से कोई भी चीज भोजन के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। वेरियर एल्विन ने उनकी अध्ययन अवधि में अपनी पुस्तक 'द बैगा' में उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि की है। रसेल व हीरालाल ने बैगाओं के 'मरकाम, नेताम, तेकाम, मरावी आदि गोंड जनजाति से मिलते-जुलते गोत्र बताये है।' स्टीफेन फुश ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि 'बैगा गोत्र के संबंध में दोहरी गोत्र प्रणाली प्रयोग में लाते हैं। प्रथम को 'जात' कहा जाता है कुछ लोग इसे 'खेर' (प्राचीन निवास स्थान) कहते हैं। वस्तुतः जात या खेर एक क्षेत्रीय इकाई है। वेरियर एल्विन ने टोटम संबंधी जानकारी देते हुए लिखा है कि बैगाओं के कोई वास्तविक टोटम नहीं है फिर भी कुछ टोटम को ये स्वीकार करते हैं जैसे- मरकाम गोत्र का टोटम-आम, नेताम का कुत्ता तथा परतेती का मगर है। ये अपने टोटम को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाते हैं।'

परिवार - बैगा परिवार के बारे में बताते हुए एल्विन लिखते हैं कि बैगा जनजाति के परिवारों का औसत आकार 3.7 से 4.0 तक होता है। रसेल ने बैगाओं में बहुविवाही परिवार का उल्लेख किया है तथा इनके समाज में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन बताया है। रसेल के अनुसार-बैगा समाज में प्रत्येक पुरूष को एक से अधिक पत्नी रखने का अधिकार है। एल्विन बैगा जनजाति में एकाकी व संयुक्त परिवारों का उल्लेख किया है तथा सभी परिवार पितृसत्तामक बताये है।

विवाह - बैगा अपने ही वंश में या अपने ही समान संख्या के देवताओं को मानने वालों में विवाह संबंध नहीं करते, किन्तु वह अपनी मां के वंश में विवाह कर सकते हैं। बैगा जनजाति के विवाह तय करने की तीन पद्धतियों का उल्लेख किया है - 'प्रथम में लड़का-लडकी के जन्म के बाद विवाह तय हो जाता है। दूसरी पद्धति भी पहली पद्धति से मिलती जुलती है दोनों अवसरों पर लड़के वालों की ओर से दावत (भोज) दी जाती है। तीसरी पद्धति के अंतर्गत विवाह योग्य लड़के व लड़की के हो जाने पर सगाई की रस्म के बाद विवाह तय होता है।

मृत्यु संस्कार - रसेल व हीरालाल ने बैगा जनजाति के मृत्यु संबंधी संस्कारों को इस प्रकार स्पष्ट किया है - मृतकों का सम्मान पूर्वक दाह संस्कार किया जाता है। दफनाते समय गड्ढे में दक्षिण की ओर सिर करके शव के साथ में दो तीन रूपये और तम्बाकू रखते हैं। कभी-कभी मरते समय शव के मुख में चांदी का सिक्का डाला जाता है जो शव जलने के उपरांत बहन या पुत्री उठाकर ताबीज (गले में पहनने का लाकेट) के रूप में धारण कर लेती है। दफनाने के बाद उस जगह को समतल बनाकर उस पर एक पत्थर खड़ा कर देते हैं। यह मिरी कहलाता है।

नातेदारी - बैगा जनजाति की नातेदारी गोत्र, गढ़ व परिवार पर आधारित रहती है, वेरियर एल्विन ने इन संबंधों को इस प्रकार चित्रित किया है- ममेरे फुफेरे बच्चों (मामा व बुआ के बच्चे) के बीच विवाह संबंध स्थापित हो जाता है। नातेदारी व्यवस्थाके अंतर्गत बैगाओं के व्यवहार प्रतिमानों को एल्विन ने इस प्रकार स्पष्ट किया है- 'बैगाओं में घूंघट प्रथा नहीं पायी जाती किन्तु इनमें कुछ निषेधात्मक (परिहार) संबंध पाये जाते हैं, वधु, सास, ससुर व जेठ के सामने बचाव का व्यवहार करती है। पुरूष का अपनी पत्नी की बड़ी बहन के साथ बात करने में प्रतिबंध होता हैं। ससुर या वृद्ध व्यक्तियों के सामने पति-पत्नी आपस में बात नहीं करते। परिहार संबंधों के विपरीत बैगाओं में परिहास संबंध भी पाये जाते हैं - आजी-नाती, आजा-नातिन, ननद (पति की बहन), भाभी (भाई की पत्नी), नाना-नानी, जीजा (बड़ी बहिन का पति), साली (पत्नी की छोटी बहिन). के बीच परिहास संबंध पाये जाते हैं।

सामाजिक नियम - बैगा समुदाय के अपने कुछ सामाजिक नियम होते हैं जिनका पालन करना अनिवार्य होता है। मेलिनॉस्की के अनुसार - बैगा जनजाति में एक ही गोत्र में विवाह संबंध स्थापित नहीं किए जाते इन्हें तोड़ना अपराध माना जाता है।' बैगा जनजाति में पति-पत्नि आपस में एक दूसरे का नाम नहीं लेते। आपस में नाम लेने से समाज के व्यक्ति इन्हें भाई-बहिन की संज्ञा देते है। बैगाओं में अन्य नियमों की तरह कुछ भोजन संबंधी नियम भी पाये जाते है। बैगा स्त्रियां अपने पति व बच्चों के अलावा किसी अन्य व्यक्ति का जूठा भोजन

ग्रहण नहीं करता हैं। भोजन एक ही वार में परोस दिया जाता है। तथा भोजन के उपरांत ये साथ में बैठे व्यक्तियों का इंतजार किए बिना उठ जाते है। परिवार के सदस्य एक साथ मिलकर भोजन ग्रहण करते है। बैगा समाज का अभिवादन का तरीका भी अलग है जिसे वेरियर एल्विन ने इस प्रकार स्पष्ट किया है- दो समधी आपस में मिलते समय भुजाएं पकडकर तीन वार गले मिलते हैं और राम-राम कहते है तथा दाहिने हाथ से दोनों एक दूसरे के घुटन छूते है। शराव पीते समय राम-राम की जगह 'जुहार' कहते है। इसी प्रकार - लडका पिता के पैर छूता है तथा पिता लड़के की दाढ़ी छूकर जीभ से कुछ आवाज करता है। छुआछूत संवंधी नियमों के बारे में वेरियर एल्विन कहते हैं कि वैगा वच्चे अन्य जाति के साथ भोजन कर सकते हैं। रजस्वला के समय बैगा स्त्रियों को कुछ निषेधों का पालन करना पड़ता है। रेग्लेन का कहना है कि रजस्वला के समय बैगा स्त्रियों के क्रिया-कलापों पर निषेध रहता है यह पुरुष संपर्क स्थापित नहीं कर सकती। वैगा यौन संवंधों के मामले में बड़े उदार व स्वतंत्र विचार के होते है। इनके यौन संवंधी नियम वहुत लचीले होते है जवकि सभ्य समाज में यौन संवंधी नियम वहुत कठोर होते है। विवाह पूर्व यौन संवंध स्थापित करना अपराध नहीं माना जाता है। भोजन, नशा व जादू की तरह यौन संवंध स्थापित करना भी वैगाओं की प्राथमिक रूचि है। सम्पत्ति व उत्तराधिकार से संवंधित मामले वे स्वयं हल कर लेते हैं। परिवार की समस्त सम्पत्ति (चल व अचल) परिवार के मुखिया या पति की होती है। पुत्र व अविवाहित पुत्रियों की कमाई पर पिता का अधिकार होता है।

अपराध व दण्ड - इण्डियन पेनल कोर्ट व फारेस्ट एक्ट के समान ही बैगा जनजाति के भी अपने समाज में कुछ नियम मान्य हैं। जव तक वैगा किसी दूसरे वैगा की चोरी नहीं करता वह चोर नहीं कहलाता है। सरकारी आरक्षित वन से यदि कोई वैगा चोरी करता है उसे वैगा पंचायत में अपराधी नहीं माना जाता जबकि इण्डियन कोर्ट 497 में उसे अपराधी माना जाता है' । वैगा समाज में किसी भी अपराध के लिए दण्ड निर्धारण व्यवस्था पंचायत द्वारा मान्य हैं। पंचों का निर्णय ही अंतिम है व सर्वमान्य होता है।

आवास - वैगा जनजाति के मकान अन्य सभ्य समाज से भिन्न होते हैं। अनके मकान स्वनिर्मित होते हैं। वेरियर एल्विन ने वैगाओं के मकान निर्माण के बारे में बताया कि वैगा सुलभ मूल्यहीन साधनों का उपयोग अपने मकान के निर्माण में करते हैं। लकडी, वांस, घांस, बक्कल (लंबी छाल) मिट्टी इनके मकान निर्माण की उपयोगी वस्तुएं हैं।

खाद्य सामग्री - वेरियर एल्विन ने वैगाओं की भोजन सामग्री की जानकारी इस प्रकार दी- प्रमुख भोज्य पदार्थ में पेय (अधिक पानी डालकर पकाया हुआ अनाज) भाजी (पत्ते वाली सब्जी) व जंगली कंद बैगा पसंद करते है। मांस इनके भोजन में अवश्य सम्मिलित रहता है। ये सांभर, हिरन, खरगोर, मोर, चीतल व अन्य छोटे बड़े जानवरों का शिकार करके उसका मांस खाते हैं।

व्यक्तित्व एवं वेश-भूषा - वैगा जनजाति की शारीरिक संरचना, स्वभाव व जीवन विधि को विभिन्न नृतत्व-शास्त्रियों ने इस प्रकाश चित्रित किया है - वैगा जनजाति की शारीरिक संरचना का वर्णन करते हुए हीरालाल व रसेल ने इन्हें-चपटी नाक व सुन्दर आकार के सिर वाले वताया है।' कर्नल वार्ड ने अपनी मण्डला की

 ISSN 2395-051X

सेटलमेंट रिपोर्ट में मेकलरेंज के बैगाओं को सुंदर चेहरे वाले मानव कहा है, कर्नल ब्लूम फील्ड के अनुसार बैगाओं का शरीर सुडौल व सुगठित होता है। इनके होंठ अन्य जनजातियों की भांति मोटे नहीं होते। सरलता, साहस, सत्यता और ईमानदारी उनके व्यक्तित्व का प्रधान गुण है। वेरियर एल्विन ने बैगाओं के व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि बैगा गोंड व हिन्दू किसानों के मध्य अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण आसानी से पहचाने जा सकते हैं।

साज श्रृंगार एवं स्वच्छता - बैगाओं के स्नान न करने की धारणा के संबंध में अनेक धारणाएं प्रचलित हैं। ऐ.जे. लारेन्स ने अपनी सेटलमेंट रिपोर्ट में बताया है कि बैगाओं की ऐसी धारण थी कि यदि वे स्नान करेंगे तो उनको शेर खा जायेगा व सांप आक्रमण करेगा।'

केश विन्यास - बैगा पुरूष अपने बालों को पीछे ले जाकर जूड़ा बांधते हैं जो सिर के बायीं और लटकता है। बैगा पुरूष व स्त्रियां बाल नहीं कटवाते हैं।

गोदना - बैगा एशिया महाद्वीप की सबसे पुरानी जनजाति है तथ सबसे ज्यादा गोदना प्रिय जनजाति है। गोदना (अंग आलेखन) की प्रथा अत्यन्त प्राचीन है, बैगा स्त्रियां गोदना को स्वर्गिक अलंकरण मानती है। बैगा स्त्रियां गुप्तांगों को छोड़कर अपना पूरा शरीर गोदवाती हैं ने कहा है कि गोदने आभूषणों की तरह तथा विभिन्न प्रकार के सजावटी नमूने के गोदवाये जाते हैं।

आभूषण - आभूषणों के नाम पर हीरालाल व रसेल ने बैगा स्त्रियों के शरीर पर गोदना ही उनका आभूषण बताया है। एल्विन के अनुसार बैगा पीतल, तांबा, लोहा, सिल्वर, चांदी की धातु के आभूषणों का उपयोग करते है।

नृत्य व संगीत - अवकाश के समय बैगा नृत्य व संगीत के द्वारा अपना मनोरंजन करते है। हीरालाल व रसेल ने इनका प्रसिद्ध नृत्य 'करमा' वताया है जिसे पुरुष व स्त्रियां दोनों मिलकर करते है। इनका संगीत में 'फाग' तथा 'ददरिया' मुख्य है तथा नृत्य में कर्मा, दशहरा, झरपट व विलमा नृत्य की प्रमुखता है। 'मांदर' को इनका प्रसिद्ध वाद्ययंत्र वताया है। इसके अलावा नगाड़ा, टिमकी, चुटकी, किनारी बांसुरी आदि बैगाओं के प्रमुख वाद्य यंत्र है।

भाषा - वैगानी भाषा को एल्विन ने इस प्रकार स्पष्ट किया है -बैगा जाति नेअपनी पुरानी आस्ट्रोएशियाटिक भाषा छोड़कर अपने क्षेत्र में वहुप्रचलित आर्यन भाषा से आत्मसात कर लिया है तथा अपनी भाषा को छोड़कर छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रयोग करने लगे है। मंडला व जवलपुर के वैगा अवधी व गोंडी मिश्रित पूर्वी हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इन तीनों का मिश्रण वैगानी भाषा कहलाता है।

धर्म - वैगा समाज में धर्म का अत्यधिक महत्व है। वैगा जनजाति धार्मिक प्रवृत्ति की होती है। रसेल व हीरालाल के अनुसार-इनके प्रमुख देवता वूढ़ा देव (वड़ा देव) है जो 'साजा' के वृक्ष में निवास करते हैं। इनकी पूजा 'जेठ' (मई) के महीने में होती है। वकरा,मुर्गा, नारियल व नये महुआ की शराव वूढ़ा देव को चढ़ायी जाती है। ठाकुर

देव गांव की भूमि और सीमा के देवता हैं जो सफेद बकरे की बलि से संतुष्ट होते हैं। वर्षा समाप्ति के पूर्व बैगा हल चलाते हैं इस अवसर पर एक आयोजन होता है जिसे 'बिदरी' कहते हैं। इस अवसर पर एक-एक मुट्ठी अनाज प्रत्येक हल चलाने वाला गुनिया को देता है तत्पश्चात गुनिया समस्त अनाज मिलाकर ठाकुर देव के निवास स्थान पर छिड़क (बो) देता है तथा थोड़ा-थोड़ा अनाज सभी हल वालों को देता है जो उपयुक्त स्थानों पर बो दिया जाता है शेष बचा अनाज गुनिया का होता है इस प्रक्रिया से अनाज की उपज अच्छी होती है ऐसी मान्यता बैगाओं में प्रचलित है। उक्त प्रक्रिया गुनिया द्वारा सम्पन्न होती है। दूल्हा देव बैगा समाज की बीमारियों और दुर्घटनाओं से रक्षा करते है। नारायण देव बैगाओं के कुल देवता हैं। बैगा जनजाति के त्यौहारों का उल्लेख करते हुए वेरियर एल्विन ने अंग्रजी महीनों के अनुसार वर्ष का प्रथम त्यौहार छेरता बतलाया है यह जनवरी माह में मनाया जाता है। मार्च के महीने में बैगा फाग का त्यौहार शराब के नशे में नृत्य करते हुए मनाते है। बिदरी बैगाओं के बीज बोने के पूर्व का त्यौहार है। हरेरी का त्यौहार गाय की प्रतिष्ठा से संबंधित है। वर्षाकाल के अंत में नवाखानी का त्यौहार नयी फसल के आने की खुशी में होता है। अक्टूबर के महीने में दशहरा का त्यौहार बैगा बहुत उल्लास के साथ मनाते है। दशहरा एक नृत्य पर्व है पुरुष 'शैला' व स्त्रिया 'रीना' नृत्य करती है।

जादू - अन्य आदिम जनजातियों की तरह बैगाओं में भी जादू प्रथा प्रचलित है। जीवन का नाश करने वाला जादूगर तथा जीवन की रक्षा करने वाला गुनिया कहा जाता है देवता किसे अच्छा मानते हैं नहीं मालूम पर बैगा समाज में गुनिया का सम्मान अधिक है। इनका मानना है कि बीमारी प्राकृतिक कारणों से नही जादू टोना व भूत प्रेतों से होती हैं।

शकुन अपशकुन व कहावतें - बैगा समाज में अन्य समाजों की तरह शकुन व अपशकुन (शुभ व अशुभ) विचार पाये जाते हैं वेरियर एल्विन ने बैगाओं में प्रचलित कुछ शुभ व अशुभ विचारों को साप्ताहिक दिनों से संबंधित करके इस प्रकार बताया है, इतवार का दिन बेवर के लिए अच्छा माना जाता है।, सोमवार तेल निकालने के लिए अच्छा है।, मंगलवार यात्रा के लिए बुरा है।, बुधवार का दिन लंबी यात्रा के लिए शुभ माना जाता है।, गुरूवार प्रेमी मिलन के लिए उचित है।, शुक्रवार को विश्राम व मौज-मस्ती का दिन मानते हैं।, शनिवार जंगल में काम करने के लिए अच्छा है।

आदिवासी लोककला परिषद् की प्रकाशित पुस्तक ''बैगा'' में निरगुणे ने बैगाओं के विश्वासों को इस प्रकार बताया है।, कितनी (सेहा पक्षी) 'शै-शै बोलता है तो अशुभ समझा जाता है।, कौआ किसी व्यक्ति के सिर पर बीट करे तो दुःखद घटना का संकेत हैं।, कार्य हेतु जाते समय मोर, बन्दर, शेर और सर्प मिल जाये तो कार्य सिद्ध होता हैं।, लोमड़ी व कुत्ता के रोने से गांव में बीमारी फैलती है।, शादी की तिथि के दिन परिवार का कोई व्यक्ति शिकार में किसी जीव को मार डाले तो शादी वाले घर में दुख होता है।, मासिक धर्म के समय स्त्री गौशाला, रसोई, देवस्थान, पानी का स्थान व कुएं पर जाना अशुभ मानते है।

व्यवसाय - बैगा जनजाति के व्यवसाय की जानकारी देते हुए हीरालाल व रसेल ने बैगाओं का मुख्य व्यवसाय 'बेवर कृषि' (बिना हल की कृषि) बतलाया है। हल द्वारा कृषि न करने के पीछे बैगाओं की यह धारणा है कि

धरती मां की छाती हल चलाकर नहीं चीरना चाहिए इससे धरती मां को कष्ट होता है इसके अलावा बैगा पुरूष बांस की चटाई, टोंकनी आदि बनाकर शहद एकत्रकर, जंगली जड़ें एकत्रित करके साप्ताहिक बाजार में बेंचकर उससे आय प्राप्त करते है। बेवर कृषि का तरीका बताते हुए कर्नल वार्ड ने लिखा है कि पहाड़ी ढलानों पर बैगा वृक्ष को काटकर आग लगा देते थे तथा राख बन जाने पर उस पर बीज बो देते थे। बैगा जनजाति शिकार प्रिय है ये सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों प्रकार के शिकार करते है। बैगा कुल्हाड़ी व धनुषबाण द्वारा चूहे से शेर तक का शिकार करते हैं। वेरियर एल्विन के अनुसार- मछली का शिकार ये लोग बड़े शौक से करते हैं। गांव के पास नदी या झरने में जाकर विभिन्न फंदों की सहायता से मछली का शिकार करते हैं। स्वतंत्र व्यवसाय को पसंद करने वाले बैगा मजदूरी करना पसंद नहीं करते। बैगा जनजाति की व्यय की मदें बहुत कम होती हैं, क्योंकि ये अधिकांश आवश्यकताओं को जंगलों द्वारा पूरा कर लेते हैं।

मानव जीवन परिवर्तनशील है परिवर्तन प्रकृति का नियम है इस आधुनिक परिवर्तित दौर में भी बैगा जनजाति अपनी संस्कृति व परम्परा को सुरक्षित रखे हुये हं यही इस जनजाति की पहचान है।

संदर्भ -

1. आर्चर, डब्लयू जी, बैगा पोयट्री, मेन इन इण्डिया, वाल्यूम 23, 1943
2. एल्विन, व्ही, द मारिया एण्ड देयर घोटुल, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी, लन्दन 1947.
3. एल्विन व्ही, द बैगाज, ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली 1986.
4. एडवर्ड, जे.जे. एट्राइबल विलेज ऑफ मिडिल इण्डिया, जनरल आफ एन्थ्रोपोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, प्रकाशन भारत सरकार, कलकत्ता, 1970.
5. घुरिये, जी.एस., द शेडयूल ट्राइब्स, पापुलर प्रकाशन, बाम्बे, 1963.
6. त्रिपाठी, रमेशचन्द्र बैगाजनजाति एक सामाजिक अध्ययन, आदिम जाति अनुसंधान संस्थान, भोपाल, 1985.
7. दुबे श्यामचरण, मानव और संस्कृति, राधाकमल प्रकाशन दिल्ली, 1969,1982.
8. बापट एन.व्ही. बैगा ट्राइब्स आफ इंडिया, आदिम जाति सेवक संघ, नई दिल्ली 1950.
9. राबर्ट, रेडफील्ड, लिटिल कम्यूनिटी, द यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, शिकागो 1955.
10. रिजले ई., ट्राइब्स कास्ट्स आफ द सेन्ट्रल प्रोबिन्सेज आफ इंडिया, वाल्यूम4, कास्मो पब्लिकेशन नई दिल्ली 1975.
11. हट्टन जे.एच., सेन्सस ऑफ इंडिया, वाल्यूम2, भाग 3 बी, एथनोफिक नोट्स, गवर्नमेंट प्रेस, शिमला, 1931.
12. शर्मा, टी.डी., बैगा, छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी , 2012.
13. मस्करे, गरीबीन, मध्यप्रदेश के जनजातियों की संस्कृति एवं परम्परायें, आवोन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2018.
14. चौरसिया, डॉ. विजय कुमार, प्रकृति पुत्र बैगा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2009.